B.Ed II

मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)

मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ है - मूल्य का अंकन मापन द्वारा केवल किसी वस्तु, प्राणी अथवा क्रिया को किसी विशेषता को मानक शब्दों, चिन्हों अथवा इकाई अंकों में व्यक्त किया जाता है

साधारण अर्थों में कहा जा सकता है कि किसी वस्तु, उपलब्धि, प्रक्रिया आदि का मूल्य अंकित करना मूल्यांकन कहलाता है। शिक्षा में मूल्यांकन का प्रयोग वर्तमान शताब्दी की घटना है।

मूल्यांकन की परिभाषाएँ (Definitions of Evaluation)

1.) क्लार एंव स्टार का विचार View of Clar and Star) → "मूल्यांकन वह निर्णय या विश्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

परीक्षा प्रणाली में सुधार की दृष्टि से अब विभिन्न प्रकार की परीक्षा प्रणालियों का शिक्षण में प्रयोग किया जा रहा है। क्योंकि कोई भी प्रणाली दोष मुक्त नही है इसलिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन दोनो को ही शिक्षण में उपयोग किया जाना अनिवार्य है, जो इस प्रकार है—

(1) सतत् आन्तरिक मूल्यांकन — सतत् आन्तरिक मूल्यांकन की अब अधिक आवश्यकता महसूस होने लगी है सतत - आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन शिक्षण कार्य कर रहे अध्यापकों के द्वारा सत्र के बीच मे लगातार थोड़े - थोड़े अन्तराल पर किया जाता रहता है तथा छात्रों को उनकी कमियों व सफलताओं की जानकारी दी जाती है। इससे छात्रों को पृष्ठपोषण मिलता तथा वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप सर्वोत्तम शैक्षिक प्रगति करने के लिए प्रयासरत् रहते है। सतत् व्यापक मूल्यांकन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है —

) सतत् मूल्यांकन के द्वारा छात्रों की निष्पत्ति मे सुधार किया जा सकता है।

) यह मूल्यांकन प्रणाली छात्रों को निरन्तर अध्ययन की आदत का विकास करती है।

3) सतत् मूल्यांकन में मापन एवं मूल्यांकन की अनेक प्रविधियों तथा उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है जैसे- अवलोकन साक्षात्कार, निर्धारण मापनी तथा औपचारिक परीक्षाएँ आदि।

2) व्यापक मूल्यांकन — सतत् मूल्यांकन की उपरोक्त विशेषताओं से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण प्रक्रिया में सतत् मूल्यांकन प्रणाली को सम्मिलित किया जाना अनिवार्य है। परन्तु इससे यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं होता है कि शिक्षण-प्रक्रिया में से व्यापक अथवा सतान्त बाधा मूल्यांकन की कुछ प्रमुख को हटा दिया जाए प्रत्येक परीक्षा प्रणाली का अपना उद्देश्य होता है और जो इस उद्देश्य की पूर्ति भी करती है इस प्रकार व्यापक या सतान्त -बाधा मूल्यांकन की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है

1 व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में दोनों की निष्पत्ति का आकलन व्यापक रूप में किया जाता है। तथा यह भी निश्चय किया जाता है कि छात्र ने पाठ्यवस्तु पर किस सीमा तक स्वामित्व प्राप्त कर लिया है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

परीक्षा प्रणाली में सुधार की दृष्टि से अब विभिन्न प्रकार की परीक्षा प्रणालियों का शिक्षण में प्रयोग किया जा रहा है। क्योंकि कोई भी प्रणाली दोष मुक्त नही है इसलिए सतत एवं व्यापक मूल्यांकन दोनो को ही शिक्षण में उपयोग किया जाना अनिवार्य है, जो इस प्रकार है–

(1) सतत आन्तरिक मूल्यांकन – सतत आन्तरिक मूल्यांकन की अब अधिक आवश्यकता महसूस होने लगी है सतत - आन्तरिक मूल्यांकन प्रणाली के अन्तर्गत छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन शिक्षण कार्य कर रहे अध्यापकों के द्वारा सत्र के बीच मे लगातार थोड़े - थोड़े अन्तराल पर किया जाता रहता है तथा छात्रों को उनकी कमियों व सफलताओं की जानकारी दी जाती है। इससे छात्रों को पृष्ठपोषण मिलता तथा वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप सर्वोत्तम शैक्षिक प्रगति करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। सतत व्यापक मूल्यांकन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है –

) सतत मूल्यांकन के द्वारा छात्रों की निष्पति में सुधार किया जा सकता है।

) यह मूल्यांकन प्रणाली छात्रों को निरन्तर अध्ययन की आदत का विकास करती है।

2) व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में छात्रों को इस प्रकार के प्रश्न दिये जाते हैं कि वह अपनी सर्जनात्मक तथा चिन्तन-शक्ति का विकास कर सके।

3) व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में मौखिक लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षाएँ सम्मिलित की जाती है जिसे छात्र का पूर्ण मूल्यांकन हो जाता है।

4) व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में शिक्षा के ज्ञानात्मक भावात्मक तथा क्रियात्मक उद्देश्यों को महत्व दिया जाता है

5) यह औपचारिक - शिक्षण प्रक्रिया के ढंग से किन्ही भी अध्यापकों द्वारा सम्पन्न की जा सकती है

6) व्यापक मूल्यांकन का कार्य छात्रों की अवस्था करना, वर्गीकरण करना, प्रमाण-पत्र प्रदान करना उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम में प्रवेश दिलाना है।

7) व्यापक परीक्षाएँ विभिन्न शिक्षा संस्थाओं के परीक्षा परिणामों में एकरूपता लाने की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है।